जपुजी साहिब

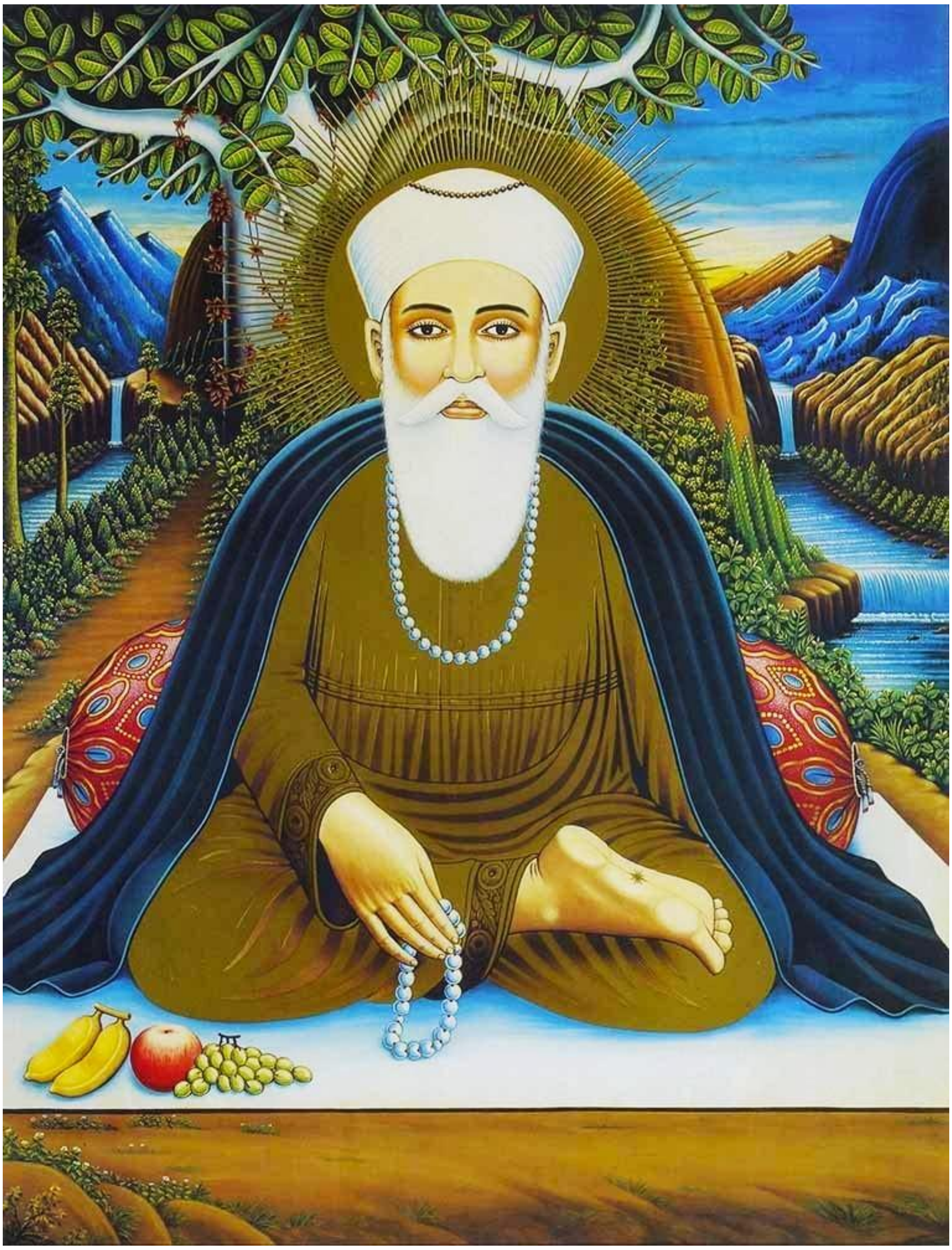

ੴ सतिनामु

करता पुरखु

निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति

अजूनी सैभं

गुर प्रसादि

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

है भी सचु

नानक होसी भी सचु ॥१॥

सोचै सोचि न होवई
जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई
जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी
जे बंना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि
त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ
किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा
नानक लिखिआ नालि ॥१॥

हुकमी होवनि आकार
हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ
हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि
दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस
इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को
बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै
त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥
साचा साहिबु साचु नाइ
भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि
दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ
जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ
जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंम्रित वेला सचु नाउ
वडिआई वीचारु ॥

करमी आवै कपड़ा
नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ
सभु आपे सचिआरु ॥४॥
थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु
पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही
कहणा कथनु न जाई ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा
विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा
विणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक

जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा
होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ
नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै
जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई
त वात न पुछै के ॥

कीटा अंदरि कीटु करि
दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे
गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई
जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥
सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
मंनै सगल भवण की सुधि ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥
मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥
मंनै मगु न चलै पंथु ॥
मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

असंख जप असंख भाउ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥

असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख गल वढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

असंख नाव असंख थाव ॥
अगंम अगंम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

विणु गुण कीते
भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु
कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु
जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती
जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ
जि लिखनि लेखु कुराणु ॥

थिति वारु ना जोगी जाणै
रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे
आपे जाणै सोई ॥
किव करि आखा किव सालाही
किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै
इक दू इकु सिआणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई
कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै
अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख
आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके
वेद् कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा
असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ
लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ
आपे जाणै आपु ॥२२॥

सालाही सालाहि
एती सुरति न पाईआ ॥

नदीआ अतै वाह
पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
समुंद साह सुलतान
गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी
जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥

अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

केते मंगहि जोध अपार ॥
केतिआ गणत नही वीचारु ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥
केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥
बंदि खलासी भाणै होइ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥

आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥
अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥

आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
आखहि वेद् पाठ पुराण ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इंद् ॥
आखहि गोपी तै गोविंद् ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखणि पाहि ॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि ॥

ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलु विगाड़ु ॥
ता लिखीऐ
सिरि गावारा गावारु ॥२६॥
सो दरु केहा सो घरु केहा
जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा
केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि
केते गावणहारे ॥

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु
गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि
लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु बरमा देवी
सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इदासणि बैठे
देवतिआ दरि नाले ॥
गावहि सिध समाधी अंदरि
गावनि साध विचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी
गावहि वीर करारे ॥

गावनि पंडित पड़नि रखीसर

जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि

सुरगा मछ पइआले ॥

गावनि रतन उपाए तेरे

अठसठि तीरथ नाले ॥

गावहि जोध महाबल सूरा

गावहि खाणी चारे ॥

गावहि खंड मंडल वरभंडा

करि करि रखे धारे ॥

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि

रते तेरे भगत रसाले ॥

होरि केते गावनि से मै चिति न
आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु
साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी
माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि वेखै कीता आपणा
जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी
हुकमु न करणा जाई ॥

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई ॥२७॥
मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती
मनि जीतै जगु जीतु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि
घटि घटि वाजहि नाद ॥
आपि नाथु नाथी सभ जा की
रिधि सिधि अवरा साद ॥
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि
लेखे आवहि भाग ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ॥२६॥
एका माई जुगति विआई
तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी

इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै
जिव होवै फुरमाणु ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै
बहुता एहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥
आसणु लोइ लोइ भंडार ॥
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
नानक सचे की साची कार ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥
इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि
लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा
आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
एतु राहि पति पवड़ीआ
चड़ीऐ होइ इकीस ॥
सुणि गला आकास की
कीटा आई रीस ॥
नानक नदरी पाईऐ
कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी
धरम साल ॥

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर
केते कान महेस ॥

केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि
रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करमभूमी मेर केते केते धू
उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते
केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध
नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते
केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी
केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते
नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥
सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ
सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीऐ
सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥
करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥

तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥

तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भाँडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता
माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ
खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ
वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी
के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ
गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले
केती छुटी नालि ॥१॥

वाहिगुरू जी का खालसा ॥
वाहिगुरू जी की फतहि ॥